REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

नागपुर की स्त्री शिक्षा में स्त्री शिक्षा संस्थाओं का योगदान (सन् 1878 से 1913 तक)

डॉ. अभिलाशा राऊत
सहायक प्राध्यापिका, हिस्लॉप महाविद्यालय, नागपूर.

सारांश –

19 वी शताब्दि आधुनिक भारत के इतिहास में राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिवर्तन के लिए जानी जाती हैं। 19 वी शताब्दि के पुर्वार्ध एवं उत्तरार्ध में जो सामाजिक परिवर्तन आंदोलन हुए उनसे नागपुर भी अछुता न रहा। ब्रिटिश शासनकाल में मध्यप्रान्त एवं बरार की राजधानी रह चुका और वर्तमान भारत का हृदयस्थल नागपुर शहर प्रारंभ से ही विविध राजनैतिक सत्ता, व्यवसाय, विभिन्न सभ्यता के लोकसमुह का क्षेत्र रह चुका है। 19 वी शताब्दि के उत्तरार्ध में नागपुर में जो सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन प्रारंभ हुए उनके केंद्रस्थल में स्त्री थीं। परन्तु, अन्य प्रान्तों की तुलना में स्त्रीविषयक विचार, स्त्री शिक्षा, स्त्रियों की स्थिति आदि में नागपुर प्रान्त की स्थिति पिछडी हुई थीं। यहा का समाजीक जीवन सती प्रथा, बालविवाह, बाल विधवा आदि समस्याओं से घिरा हुआ था। इन समस्याओं से लड़ने का कार्य आधुनिक पाश्चात्त्य शिक्षा प्राप्त पुरूष वर्ग के द्वारा प्रारम्भ किया गया। सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन में स्त्री शिक्षा को माध्यम बनाया गया। परंपरावादी एवं रूढ़िवादी समाज का विरोध होते हुए भी समाज सुधारकों ने स्त्री शिक्षा का कार्य नागपुर में प्रारंम्भ कियज्ञं

नागपुर में स्त्री शिक्षा के प्रारम्भिक प्रयास

19 वी शताब्दी के अंत तक स्त्री शिक्षा के संदर्भ में नागपुर में सामाजिक जनजागृति की शुरूवात हो चुकी थीं। स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में हस्तक्षेप करने से रूढीवादी भारतीय समाज विरोध कर सकता हैं इस भय के कारण ब्रिटिश सरकार स्त्री शिक्षा के प्रति उदासीन थीं। परन्तु ब्रिटिश व्यापारियों के साथ आए हुए ईसाई धर्मोपदेशकों ने स्त्री शिक्षा का कार्य प्रारम्भ किया। परन्तु धर्मांतर के भय के कारण ईसाई स्कुलों में लड़कियों को भेजने के लिए माता–पिता तैयार नहीं होते थें। इसी दौरान नागपुर के समाजसुधारकों ने स्त्री शिक्षा के लिए प्रयास प्रारंम्भ किए।

19 वीं शताब्दि के अंत में और 20 वी शताब्दि के पूर्वार्ध में मुंबई एवं पुना क्षेत्र के उच्च शिक्षित युवा वर्ग विवाह करके अथवा व्यवसाय करने के उद्देश से नागपुर में बसने लगे। इन उच्च शिक्षित युवा वर्ग का नागपुर के सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ने लगा जिसके कारण स्त्री शिक्षा एवं स्त्रियों का सामाजिक स्थान आदि के संबंध में सकारात्मक परिवर्तन होने लगे। लोग लड़कियों को स्कुलों में पढ़ने के लिए भेजने के लिए तैयार

हुए। लड़कियों के लिए स्कुल खुलने लगे। लिखना, पढ़ना आदि प्राथमिक शिक्षा के साथ ही सिलाई, बुनाई, हिसाब, दाई प्रशिक्षण, सुत कताई आदि विविध विषयों की जानकारी एवं प्रशिक्षण लड़कियों को स्कुलों में दिया जाने लगा।

प्रारम्भ में पुरूष सुधारकों द्वारा स्त्री शिक्षा के कार्य में सहभाग लिया गया। परन्तु धीरे–धीरे जनजागृति होने लगी एवं पुरूषों के साथ पढ़ी लिखी स्त्रियों ने भी स्त्री शिक्षा के कार्य में सहभाग लेना शुरू किया। नागपुर में स्त्री शिक्षा का जो आंदोलन शुरू हुआ वह काफी धीमी गति से

आगे बढ़ रहा था। प्रारम्भ में पढ़ी–लिखी स्त्रियों की संख्या बहुत कम थीं। सामान्य स्त्री वर्ग में जागृति का अभाव था; यहाँ का स्त्री वर्ग संघटित नहीं था, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं था। समाज पुरानी परंपरों एवं रूढ़ियों से जखड़ा हुआ था। इन परिस्थितियों में नागपुर में स्त्री शिक्षा संस्थाओं की स्थापना हुई और इनके द्वारा नागपुर की स्त्री शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया।

भिड़े गर्ल्स एज्युकेशन सोसायटी, नागपुर (सन् 1878)

नागपुर में स्त्री शिक्षा का कार्य प्रारंभ करनेवाली पहली संस्था हैं भिड़े गर्ल्स् एज्युकेशन सोसायटी। इस संस्था के द्वारा नागपुर में भिड़े कन्या शाला आज भी चलाई जाती हैं। सन् 1876–77 का समय भारम में राष्ट्रवाद के उदय एवं विकास का समय था। इस दौरान पश्चिम महाराष्ट्र में भी स्त्री शिक्षा के प्रयास प्रारम्भ हो चुके थे। इन प्रयासों का प्रभाव नागपुर के सामाजिक जीवन पर भी हुआ। नागपुर के सद्गृहस्थ श्री गोपालराव भिड़े सामाजिक कार्यो में एक क्रियाशील व्यक्ति के रूप में जाने जाते थें। उनका सोचना था कि स्त्री शिक्षा के विकास से ही सामाजिक विकास संभव हैं। अपनी इसी सोच के कारण उन्होंने अपने सहयोगी मोरेश्वर पारधी के साथ मिलकर स्त्रियों को शिक्षा देने का कार्य सन् 1876 से ही नागपुर में सीताबर्डी क्षेत्र के मेनरोड पर स्थित भिड़ेवाडा नामक जगह पर प्रारम्भ किया।[1] धीरे–धीरे इसमें छात्राओं की संख्या बढ़ने लगी और स्त्री शिक्षा के कार्य को बढ़ावा देनेवाले देशभक्त लोगों का सहयोग भी बढ़ने लगा। तब इस शाला को संस्था का रूप दिया गया। इस प्रकार सन 1878 में भिड़े गर्ल्स् एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना हुई। 'शील परं भूषणमं' यह संस्था का घोषवाक्य हैं।

जिस समय भिड़े गर्ल्स् एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना हुई वह समय स्त्री शिक्षा के लिए बिल्कुल भी अनुकुल नहीं था। इसलिए संस्था के सदस्यों को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। पुरानी परंपरावादी चौखट में जीनेवाली स्त्रियों को स्त्री शिक्षा का महत्व समझाकर उन्हें शिक्षा के लिए घर से बाहर लाने के लिए संस्था के सदस्यों को बहुत प्रयास करने पड़े। इन्हीं प्रयासो के कारण धीरे–धीरे समाज की मानसिकता बदलने लगी। सन 1900 के बाद सीताबर्डी धंतोली, रामदासपेठ, महल आदि नागपुर के विविध स्थानों से मध्यमवर्गीय एव गरिब घरों से लड़कियाँ पढ़ने के लिए आने लगी। सन् 1917 में सरकारी नियमों के अनुसार भिड़े गर्ल्स् एज्युकेशन सोसायटी का पंजीकरण किया गया।

प्रारंभिक समय में गोपालराव भिड़े, मोरेश्वर पारधी, विनायकराव केलकर, गोपालराव गर्दे, गोपालराव देव, माधवराव किनखेडे, वासुदेवराव पुराणिक आदि नागपुर के जेष्ठ सुधारकों द्वारा संस्था के अध्यक्ष के तौर पर कार्य कर संस्था की निःस्वार्थ सेवा भी की। सरकार की आर्थिक सहायता के बिना ही संस्था चल रहीं थीं। अतः संस्था को बहुत सारी आर्थिक कठनाईयों का सामना करना पड़ा। छात्राओं से किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। संस्था के सदस्य लोगों से मिलकर अनुदान प्राप्त कर संस्था का खर्चा चलाते थें। छात्राओं की संख्या बढ़ने के साथ–साथ संस्था की आर्थिक जरूरतें भी बढ़ने लगी। तब यह निश्चय किया गया कि लोंगों के मनोरंजन के लिए नाटक शुरू किए जाए एवं उससे प्राप्त होनेवाले निधि का उपयोग स्कुल के विकास के लिए किया जाए।[2] इस प्रकार टिकट बिक्री के माध्यम से स्कुल को आर्थिक लाभ मिलने लगा। सन् 1923 से शाला को सरकारी अनुदान प्राप्त होने लगा। सन् 1946–47 में भिड़े कन्या शाला के अनुदान प्राप्त प्राथमिक कक्षा को 900 रू. अनुदान प्राप्त हुआ जिसमें म्युनिसिपल कमिटी से प्राप्त 300 रू. का भी समावेश था।[3]

संस्था द्वारा चलाए जानेवाले विविध उपक्रम –

समाज एवं छात्राओं की जरूरतों को ध्यान में रखकर भिड़े कन्या शाला में नए–नए विषय एवं उपक्रम शुरू किए गए। शाला के विकास के साथ ही छात्राओं और शिक्षकों की संख्या बढ़ने लगी। चित्रकला की शुरू कक्षाएँ किया गया। छात्राओं एवं शिक्षकों के लिए ग्रंथालय की सुविधां प्रारम्भ की गई। छत्राओं को वक्तृत्व स्पर्धाओं में सहभाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाने लगा। ऐतिहासिक, भौगलिक एवं कलापुर्ण वस्तुओं एवं विविध व्यंजनों का प्रदर्शन छात्राओं द्वारा लगाया जाता था। दिपावली एवं गर्मी की छुटटीयाँ लगने से पूर्व सभी छात्रा, कर्मचारी, एवं शिक्षक मिलकर शाला की सफाई में योगदान देते थे। इसके माध्यम से स्वच्छता का संदेश छात्राओं को दिया जाता था। छात्राओं के लिए खो–खो, लंगडी, हुतूतू, गेंद फेकना आदि खेलों का भी आयोजन किया जाता था। गर्मी की छुट्टी में छात्राओं को गोडेवाडा तालाब पर ले जाकर, तैराकी सिखाई जाती थीं।[4] आगे चलकर गृहअर्थशास्त्र यह विषय एवं बॅडमिंटन, बास्केटबॉल इन खेलों को भी उपक्रमों मे शामिल किया

गया। गरिब छात्राओं के लिए 'गुडकॉज फंड' शुरू करने का उल्लेख सन् 1934 के रिकॉर्डबुक में मिलता हैं इसके माध्यम से गरिब छात्राओं को शिष्यवृत्ती, किताबे आदि दी जाती थीं।[5] NCC का युनिट प्रारंभ करनेवाली एकमात्र मराठी माध्यम की शाला थीं भिडें. कन्या शाला। इस प्रकार छात्राओं के सुप्त गुणों को बढ़ावा देने के लिए परिस्थिती एवं आवश्यकता के अनुरूप विविध उपक्रम संस्था के द्वारा चलाए जाते थें।

विविध परिक्षाएँ एवं छात्राओं की सफलता –

प्रारंभ में संस्था के द्वारा केवल प्राथमिक कक्षाएँ ही चलाई जाती थीं। शाला में अंग्रेजी माध्यम में चौथी कक्षा नहीं थीं। शाला की मुख्याध्यापिका श्रीमती शांताबाई भाटवडेकर के प्रयासों से अंग्रेजी माध्यम में चौथी कक्षा शुरू की गई जिसके लिए छात्राओं के पालकों से 10 रू. प्रतिमाह अतिरिक्त शुल्क लिया गया। इस निधी में से शिक्षकों को वेतन दिया जाता था। 1930 में शाला की छात्राओं की शालांन्त परिक्षा में पहली बॅच बैठी। इस परिक्षा में कु. विमल अभ्यंकर यह अकेली छात्रा उत्तीर्ण हुई। इस प्रकार भिड़े कन्या शाला की शालान्त परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली कु. विमल अभ्यंकर यह पहली छात्रा बनी।[6]

संस्था को समर्पित भाव से कार्य करनेवाले शिक्षक मिलने से संस्था के विकास की गति बढ़ गई। शाला की मुख्याध्यापिका मथुताई द्रविड का संस्था को सरकारी अनुदान दिलवाने में बहुत बड़ा योगदान है।[7] श्रीमति सुशीलाबाई मोहनी जब शाला की मुख्याध्यापिका थी उस समय चित्रकला, गृहअर्थशास्त्र यह विषय एवं लेझिम् बॅडमिंटन, बास्केटबॉल आदि खेलों को अभ्यासक्रम में जोडा गया। कॉंग्रेस एवं अन्य पक्षों द्वारा जब भी सरकार के विरोध में राष्ट्रीय आंदोलन होते थें शाला के शिक्षक एवं छात्राएँ उसमें सहभाग लेते थें। इस तरह राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रवाद की शिक्षा छात्राओं को शाला में ही मिल रही थीं। शाला में साम्प्रदायिकता के लिए कोई स्थान नहीं था। सभी सम्प्रदाय एवं धर्म के शिक्षक एवं छात्राएं यहा थें। इस प्रकार साम्प्रदायिकता से दूर राष्ट्रवाद की शिक्षा शाला में जाती थी।

टाटा पारसी गर्ल्स् हायस्कुल, नागपुर (सन् 1887)

नागपुर की टाटा पारसी गर्ल्स् हायस्कुल यह शाला स्त्री शिक्षा के कार्य में योगदान देनेवाली एक महत्वपूर्ण संस्था हैं। सन् 1877 में जमशेदजी टाटा नामक पारसी सज्जन ने नागपुर में एम्प्रैस मिल की स्थापना की। इस कारण कुछ पारसी परिवारों का नागपुर में आगमन हुआ। सन् 1887 में एम्प्रैस मिल के द्वारा मिल में काम करनेवाले मजदुरो के बच्चों के लिए एक स्कुल खोला गया। इस स्कुल का कार्य मेहता नामक सज्जन एवं श्री. एन. मदन नामक शिक्षक को सौंपा गया।[8] यह स्कुल 'दि एम्प्रेस मिल जोरोस्टियन 'चिल्ड्रेन्स्' के नाम जानी जाती थीं। यह प्रायमरी स्कुल थीं। इसलिए यदि कोई आगे पढ़ना चाहते थें तो उन्हें अंग्रेजी मिशनरी स्कुल में अथवा सेंट जोसेफ कान्व्हेंन्ट में दाखिला लेता होता था। मिशनरी स्कुलों में केवल 16 प्रतिशत गैर इसाई लड़कियों को प्रवेश दिया जाता था। इस कारण बहुतसी लड़किया शिक्षा से वंचित रह जाती थीं। अतएवं सन् 1901 में तेहमीना करानी नामक पारसी महिलाने छठवीं कक्षा तक लड़कियों के एक स्कुल शुरू किया।[9] तेहमीना करानीने नागपूर की स्त्री शिक्षा एवं अन्य सुधार कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

प्रारंभ में तेहमीना करानी के द्वारा स्थापित स्कुल में केवल 40 छात्राओं को प्रवेश दिया जाता था। समय के साथ–साथ नागपुर की स्त्री शिक्षा में परिवर्तन हुआ। तब स्त्री शिक्षा की बढ़ती जरूरतों को पुरा करने के लिए पारसी लड़कियों के लिए हायस्कुल खोलने का विचार बेन्झोंजी मेहता, श्रीमती गुलबाई कामा, श्री पी. एम कोतवाल, श्री डी. के. कामदीन और श्री बी. पेस्तोनजी और श्री जमशेदजी बिल्लीमोरिया इनके मन में आया। तब तेहमीना करानी की प्रायवेट स्कुल को एम्प्रैस मिल की गुजराती स्कुल में विलीन करने का प्रयास किया गया। इसके लिए तेहमीनाजी से बातचीत की गई। सर दोराबजी टाटा नामक सज्जन ने स्कुल के लिए, अनुदान के रूप में बड़ी राशी दी। वे चाहते की स्कुल को उनके पिता सर जमशेदजी टाटा का नाम दिया जाए। इस प्रकार, तेहमीना करानी के परिश्रम, पारसी लोगों के द्वारा प्रदान की गई अनुदान राशी के माध्यम से 1920 में जे. ए. टाटा पारसी गर्ल्स् हायस्कुल अस्तित्व में आया।

स्कुल के भवन का कार्य धीरे–धीरे प्रारंभ किया गया। एम्प्रैस मिल एवं सेठ जमनादास पोतदार के द्वारा स्कुल के भवन के लिए भुमी का क्षेत्र दिया। 1 नवंबर, 1926 में मध्यप्रांत एवं बरार के गर्वनर सर मॉन्टेंग्यू बटलर की पत्नि श्रीमति बटलर के द्वारा स्कुल के भवन का उद्घाटन किया गया।[10] प्रारम्भ में 20 लड़कियों को

प्रवेश दिया। सन् 1927 में स्कुल को सरकारी मान्यता प्राप्त हुई। मिस ए. वेस्ट यह स्कुल की पहिली प्रधानाध्यापिका थीं। वह एक उत्तम शिक्षिका एवं कुशल प्रशासक थी। उन्ही के प्रयासों के कारण सन् 1927 में टाटा पारसी स्कुल को हायस्कुल का दर्जा प्राप्त हुआ।

अंजुमन–हामी–ए–इस्लाम, नागपुर (सन् 1888)

1888 का समय एक ऐसा समय था जब मुस्लिम महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में बहुतही पीछ़डी थीं। महिलाओं की स्थिती में सुधार के लिए यह आवश्यक था कि उन्हें शिक्षा प्रदान की जाए एवं उनके लिए स्कुल खोला जाए। नागपुर की स्त्री शिक्षा के लिए नागपुर के तात्कालिन प्रसिद्ध वकिल एवं समाजसुधारक खान साहेब मोहम्मद आमीर खान के प्रयासों से अंजुमन–हामी–ए–इस्लाम नाम की संस्था। स्थापित की गई। सन् 1896 में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा के लिए ब्रिटिश सरकार की और से सदर नामक स्थान में 4.04 एकर जमीन दी गई। इस भुमी पर स्कुल के भवन का निर्माण किया गया। उस समय मुस्लिम महिलाओं के लिए यह एकमात्र स्त्री संस्था होने के कारण दुर दूर के इलाकों से छात्राऐ यहाँ पढ़ने के लिए आनी लगी। यह उर्दु माध्यम की स्कुल थी; परंतु यहाँ अरबी, अंग्रेजी, हिंदी भाषा का ज्ञान भी छात्राओं को दिया जाता था। साथ ही लड़कियों के लिए सिलाई, बुनाई, पत्रव्यवहार इन विषयों के साथ ही खो–खो, कबड्डी आदि खेलों का भी आयोजन किया जाता था।

नागपुर एज्युकेशन सोसायटी, नागपुर (सन् 1913)

लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में जिस समय राष्ट्रीय आंदोलन अपने चरम पर था उस समय शिक्षा क्षेत्र में राष्ट्रवाद एवं ध्येयवाद से प्रेरित कुछ व्यक्ति एवं उनके परिवार कार्य कर रहें थें। उस समय नागपुर में भी एक ऐसा ही परिवार था–सुले परिवार। भी श्री. जनार्दनपंत आबाजी सुले एवं श्री शंकर आबाजी सुले इन दो बंधुओं ने नागपुर में शिक्षा संबंधीत कार्य प्रारम्भ किया। नागपुर में उन दिनों प्लेग नामक बिमारी फैली हुई थीं। अपना देश गुलाम था और सम्पूर्ण विश्वपर विश्वयुद्ध के बादल मंडरा रहा थें। ऐसी बिकट परिस्थितियों मे जनार्दनपंत एवं शंकरराव इन दो भाईओं ने सन 1913 में नागपुर एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना की। इस कार्य में उन्हें सोनुताई सुले एवं द्वारकाबाई प्रधान इन बहनोंने भी सहकार्य किया।

पुरूषप्रधान समाज में स्त्रियों के लिए कुछ करने की भावना से प्रेरित एवं बालविवाह, बालविधवा इन समस्यों से महिलाओं को बाहर निकालने एवं उन्हे आत्मनिर्भरता का मार्ग दिखाने के उद्देश से सोनुताई एवं द्वारकाबाई इन बहनों ने नागपुर के कॉंग्रेस नगर में सन् 1913 में सुले महिला विद्यालाय की स्थापना की। स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाना, उन पर उत्तम संस्कार करना, सर्वधर्मसमभाव का पाढ़ पढाना, सक्षम नागरिक बनाना आदि इस संस्था के उद्देश थें। 'नहिं ज्ञानेन् सदृशं। पवित्रं मिहः विद्यते' यह संस्था का घोषवाक्य था। कॉंग्रेस नगर से लगकर ही धंतोली का भाग समृद्ध नागरिकों की बस्ती का भाग था। इस परिसर में स्त्रीयों के लिए स्कुल की आवश्यकता थीं। यह आवश्यकता सुले महिला महाविद्यालय ने पूर्ण की। 9 मार्च 1935 को स्कुल के भवन का मध्यप्रांत एवं बरार के गर्वनर सर हाइडक्लेंरन्डन गोवन के द्वारा उद्घाटन किया गया।[11]

स्वदेशी का प्रचार, भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा का संयोग इन बातों को ध्यान में रखकर स्कुल का अभ्यासक्रम निश्चित किया गया। यहाँ गृहविज्ञान, सिलाई, संगित, नाटक, नृत्य, चित्रकला, नर्सिंग, स्वास्थ आदि विषय पढ़ाए जाते थें। गुढ़ीपाडवा, गणपति उत्सव, मकरसंक्राती, सरस्वतिपूजन, स्नेहसम्मलेन आदि अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम संस्था के द्वारा आयोजित किए जाने थें। सुले परिवार ने संस्था की स्थापना से लेकर छात्राओं को पढ़ने तक सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। समय के साथ संस्था का विस्तार हुआ और सुले संगित विद्यालय, सुले हायस्कुल, नाट्य विद्यालय, सुले, प्रायमरी स्कुल, सुले मिडल सकुल, आदि अलग अलग शालाएँ स्थापित की गई।

निष्कर्ष :–

नागपूर की स्त्री शिक्षा के कार्य में 19 वी शताब्दि के अंत में एवं 20 वीं शताब्दि के प्रारम्भ में जो प्रयास हुए उन्हीं के फलस्वरूप स्त्रियों के लिए शिक्षा प्रदान करनेवाली संस्थाओं का उदय हुआ। नागपुर की तत्कालिन सामाजिक परिस्थितीयों को देखते हुए स्त्री शिक्षा का कार्य प्रारम्भ करने का कार्य बड़ा ही कठीण था। परन्तु विपरीत परिस्थितियों के बावजुद नागपुर के समाज सुधारकों ने स्त्री शिक्षा का कार्य प्रारम्भ किया। समाज का

विरोध, सरकार का असहयोग, वित का अभाव, जगह का अभाव आदि कठिनाईयों के होते हुए भी स्त्री शिक्षा कार्य धीरे–धीरे आगे बढ़ा। स्त्री शिक्षा के कार्य की शुरूवात पुरूष वर्ग से हुई परन्तु धीरे–धीरे महिला वर्ग भी इस कार्य में सहयोग देने लगा। ब्रिटिश सरकार की ओर से प्रारंभ में कोई सहायता नहीं की गई; परन्तु धीरे–धीरे संस्थाओं की स्थिति एवं उनका स्त्री शिक्षा के कार्य में योगदान देखते हुए सरकार के द्वारा भी स्त्री शिक्षा संस्थाओं को अनुदान देना प्रारम्भ किया गया। स्त्री शिक्षा संस्थाओं में स्त्रियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाती थीं जिसके कारण पढ़नेवाली स्त्रियों की संख्या बढ़ने लगी। संस्थाओं के विकास के साथ–साथ शिक्षकों एवं छात्राओं की संख्या में वृद्धि होने लगी। सन् 1878 से नागपुर में स्त्री शिक्षा के लिए संस्था एवं शालाएँ शुरू करने का जो सिलसिला प्रारम्भ हुआ उसी से प्रेरणा लेकर नागपुर में आनेवाले समय में भी ओर अधिक स्त्री शिक्षा संस्थाएँ खोली गई।

संदर्भ ग्रंथसुची

1. शत्संवतरी महोत्सव स्मरणिका, 1978, भिडे कन्या शाला, नागपुर, पृष्ठ 07
2. शत्कोत्तर रौप्य महोत्सव स्मरणिका; 2003 भिडे कन्या शाळा, नागपुर, पृष्ठ 17
3. File No. 2-55, Education Department, 1946, C.P. & Berar Vidarbh Archieves
4. शतसंवत्सरी महोत्सव स्मरणिका, पृष्ठ 22
5. उपरोक्त, पृष्ठ 06
6. उपरोक्त, पृष्ठ 40
7. उपरोक्त, पृष्ठ 05
8. Dimand Jubilee Soavenir, Tata Parsi Girls High School, Nagpur, 1980, Page No. 06
9. उपरोक्त, पृष्ठ 06
10. उपरोक्त, पृष्ठ 24
11. 'दिनकरकुंज' – स्व. दिनकरराव उपाख्य बाबासाहेब सुले स्मरणिका, मार्च– 2005, नागपुर, पृष्ठ 47

डॉ. अभिलाशा राऊत
सहायक प्राध्यापिका, हिस्लॉप महाविद्यालय, नागपूर.